मेरे मन की बात...

मूल्य : अमूल्य

प्रकाशक - प्राप्तिस्थान
विस्मृति सोश्यल एन्ड चेरीटेबल ट्रस्ट
(स्पे. जरुरीयातवाले बालक के लिए
ट्युशन टाईप ट्रेनींग सेन्टर)
जी-१, बी ब्लोक, सनटेरेस एपार्टमेन्ट,
नवनीत शो-रुम के पीछे, नवनीत हाउस के पास में,
गुरुकुल रोड, मेमनगर, अहमदाबाद-**380 052.**
फोन : **079-27490484** मो. : **9825729482**

टाईप सेटींग - लेखक :
जयश्री आर. पटेल

संपर्क : जनक पटेल
मो. : **9825059897**

... Ladder of Development ...

Vismruti

Social & Charitable Trust

TRUSTEES

RATILAL P. PATEL
JANAKBHAI K. PATEL
KALPESH R. PATEL
MANISHA J. PATEL
JAYSHREE R. PATEL

मेरी सोच

विस्मृति में बच्चों के साथ दस साल कैसे गए उसको बयान नहीं कर सकती । बच्चों से ट्रेनिंग के दौरान कुछ ना कुछ मैं भी सिखती रही । हम एक-दूसरे से बात करने लगे । खुशियाँ-गम बाँटनें की कोशिश करने लगे । बच्चों से ही मैने जाना कि मौन भी एक भाषा है, जिसमें ना कहकर भी बहोत कुछ कहा जा सकता है । बच्चों के दिल को पढने की कोशिश की । बच्चे मुझे कुछ कह रहे हो एसा लगने लगा । वो मेरी जिंदगी का हिस्सा बन गए । बच्चे को जो दिल से समझे वो चाहिए था, इसलिए मैने कहा कि आप के लिए कुछ लिखूँ तो उन्होने दिल से हाँ कहाँ । फिर मैने ठन लिया की मैं बच्चों के दिल की बाते जो उन्होने दिल में दबाकर रखी है वो मैं कागज पर लिखूँगी शायद इस माध्यम से बच्चों के प्रति कुछ बदलाव आए ।

मैं कोई लेखिका या कवि नहीं, वो लोग तो पता नहीं कोन सी गहेराईयों में जाके दिल को छू जानेवाले शब्द ढूँढ लाते है, पर मुझे लिखना अच्छा लगता है और मैं जो दिल से सोचती हूँ उसे कागज पर लिख देती हूँ । मैं हिन्दी में पहली बार लिख रही हूँ इसलिए मुझसे कोई गलती हो तो मैं क्षमाप्रार्थी हूँ ।

मैं उन बच्चों की दिल की बात लिखने जा रही हूँ जिसे सब स्पेश्यल नीड्स कहते है । अगर इससे किसीके दिल को ठेस पहुँचे तो अपना समझके माफ कर दे । ये कुछ बच्चों की बात नहीं पर पूरे देश या विश्व में एसे बच्चे जहाँ भी है उन सबकी बात है ।

विस्मृति का सफर

विस्मृति की शुरुआत ४ जुलाइ, २००८ अषाढ माह की बीज के दिन यानि रथयात्रा के दिन हुई । हम पहले घर घर जाके बच्चों को पढाते थे पर जनकभाई किरीटभाई पटेल के मार्गदर्शन और प्रेरणा से हमने विस्मृति को खडा करने का मन बना लिया, जिसमें मेरे पिता श्री रतिलाल प्रहलादभाई पटेल और मेरी माता श्री विद्याबेन रतिलाल पटेल ने हमें हर तरह से खूब सपोर्ट किया, साथमें मेरे पूरे परिवार ने सहयोग दिया है और आज भी दे रहे है । मनिषादीदी और मैं आज जिस मुकाम पे है वो इन सब के सहयोग की वजह से है । विस्मृति की शुरुआत सिर्फ एक बच्चे से हुई थी । शुरु के तीन-चार साल का सफर बहोत ही मुश्कील रहा जिसमें हमने बहोत ही उतार-चढाव देखें । जनकभाई और मेरे माता-पिता के सपोर्ट से ही हम ये तीन-चार साल का सफर जो बहोत मुश्कील था वो तय कर पाये और सबने मन में ठन लिया था कि विस्मृति के बच्चों को आगे लेकर जाना है । हमने कभी कोई प्रचार-प्रसार नहीं किया है । बच्चे की महेनत और हमारी दी हुई ट्रेनिंग कब रंग लाई हमें पता ही नहीं चला । अब तक यहाँ कई बच्चे ट्रेनिंग लेकर अपना लक्ष्य पूर्ण करके गए है । इस १० साल के सफर में हमने उतार-चढाव सब देखा पर हमारे बच्चे हमे हर परिस्थिति में हँसाके हिम्मत

दिलाते रहे । विस्मृति अपने बच्चों के माता-पिता का भी बहोत आभारी है जिन्होनें विस्मृति पर अपना भरोसा कायम रखा ।

विस्मृति का उदेश्य ही बच्चों को स्वनिर्भर बनाना है । उनको निराश्रित बनाना है । कोई भी कार्य कोई अकेला नहीं कर सकता । विस्मृति हमेशा बच्चों के माता-पिता का सहयोग चाहता था, है और रहेगा । जिन माता-पिताने विस्मृति पर भरोसा जताकर उनको पूर्ण सहयोग दिया है यानि की घर पे भी थेरापी के एक हिस्से की तरह बच्चे को सिखाते रहे आज उनके बच्चे सब तरह की स्कील में अग्रेसर है । जिनके लिए विस्मृति उन माता-पिता को सलाम करता है ।

विस्मृति का सफर हम सब के साथ-साथ, आप सब का भी सफर है । विस्मृति के १० साल की सफलता में हमेशा आपका साथ रहा है । आप सब का प्यार ओर साथ हमे बहोत मिला है और एसे ही हमें अपना साथ हमेशा देते रहेना ।

मैं और पूरा विस्मृति सच में इश्वर का शुक्रिया करना चाहेंगे, जिसने हमे इन बच्चों को सिखाने के लिए चुना, जो सच में नेकदिल ओर निस्वार्थ भाव रखते है । हम उन्हे सिखाये, साथ में वो भी हमें बहुत कुछ सीखा जाते है, लेकिन अगर हम समझ पाये तो...

- मुझे भी सबका प्यार चाहिए ।
- मुझे अलग नजर से मत देखो ।
- मैं बोज नहीं हूँ ।
- मैं भी आपका दोस्त बनना चाहता/चाहती हूँ ।

- मुझे भी सबके साथ खेलना है ।
- मुझे भी दोस्तों के साथ गपसप करनी है ।
- मेरी गलतियाँ मुजे कहो, दूसरो को नहीं ।
- मेरे अंदर भी दिल है, तो दर्द मुझे भी होता है ।
- आपको लगता है मैं समझता नहीं,
- मैं सब समझता हूँ, समझाता नहीं ।
- मुझे स्वनिर्भर बनना है,
- मुझे प्यार, सपोर्ट और प्रेरणा दिजिए ।
- हमें भी सबके साथ कदम से कदम मिलाकर चलना है ।
- मुझे किसी तांत्रिक/बाबा की जरुरत नहीं,
- सही समय पे सही ट्रेनिंग की जरुरत है ।

- मेरी भावनाए आपके जैसी ही है तो उसे समझो,

  ओर मुझे भावनाए व्यक्त करने का मौका दो ।

- मेरी आसपास के लोग ही मेरा तिरस्कार करेंगे, तो मेरे विकास में बाधा आएगी ।

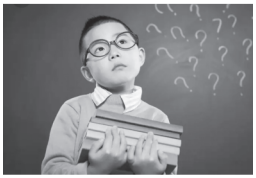

- मुझ पे उपकार मत करो,
- मुझे साथ दो ।
- मैदान में हारा हुआ इन्सान फिर से जीत सकता है, लेकिन मन से हारा हुआ इन्सान कभी नहीं जीत सकता ।
- किसके कुल में दोष नहीं है ? कितने प्राणी एसे है जो किसी प्रकार से रोगी नहीं है ? कौन एसा जीव है कि हमेशा जिसे सुख ही सुख मिल रहा है ?

विस्मृति के नजरीये से...

मेरा, मनिषादीदी ओर जनकभाई का इन बच्चों के साथ प्यार का वो रिश्ता बन गया है जिसे शब्दो में बयान नहीं किया जा सकता । इन बच्चों के साथ हमारे इतने रिश्ते जुडे है कि कितने लिखूँ समझ ही नहीं आता...

इन बच्चों ने दिल से जैसे मुझे कहाँ कि... दीदी हमारे बारे में अलग-अलग तरह की कई पुस्तिकाएँ लिखी गई, इन्टरनेट में भी आता है, टी.वी. में भी आता है, कोई किसी बाबा के पास जाएगे, किन्तु सब में हमारे वर्तन, लक्षण, प्रकार, हम एसे क्यू हुए, कौन सी उम्र में हमारी क्या स्थिति हो सकती है, हमारा रोग क्या है, उसका निदान क्या है, हमे कौन सी थेरापी चाहिए, किस डॉक्टर के पास जाना है. ये सब या उससे भी ज्यादा लिखा हुआ है । नए-नए तरीके हमारे लिए खोज करते रहते है ।... ये सब हमारे लिए बहोत अच्छा है । हमें लोग पहले से ज्यादा जानने लगे है । हमारी सही थेरापी हो रही है या होगी ।... लेकिन इन सबसे पहले हमे दिल से समझनेवाला चाहिए, हमारे गुस्से को समझनेवाला चाहिए, हमे वो चाहिए जो हमे प्यार ओर गुस्सा दोनो देकर संभाल सके... वो चाहे घर मे हो, संबंधी हो, शाला-थेरापी या सोसायटी का व्यक्ति हो...

हम (विस्मृति) जिन बच्चों को पढाते है उसे स्पेश्यल

बच्चे कहाँ गया है । हम लोग हमारी वास्तविक जिंदगी में स्पेश्यल किसे कहते है ?... जो नोर्मल से अच्छे हो । हम लोग जिन बच्चो को सिखाते/पढाते है वो बच्चे पढाई में भले ही कम हो पर गुणो में नोर्मल से बहोत ही अच्छे है । सहनशीलता, आदर, निस्वार्थ, निराभिमान, परिस्थिति का सामना करना, हर परिस्थिति में हँसते रहना, कोशिश करते रहना, हकारात्मक सोच... इत्यादि.. तो ये बच्चे सच में स्पेश्यल हुए ना ।

ये सब गुणो के बारे में पुस्तिकाओ में पढा था, बडो से सुना था कि एसे गुण हमारे अंदर होने चाहिए, पर इसका अमल नहीं कर पाते थे । इन बच्चों के करीब आने से या फिर ये कहूँ कि वो मेरी जिंदगी मे आए या मैं उनकी जिंदगी मे... मुझमे बहुत बदलाव आया है । मैं आभार व्यक्त करके उनको पराया नहीं करना चाहती । बच्चे विस्मृति की धडकन है । बच्चो से ही विस्मृति धडकता है ।

ये बच्चे दूसरे पर निर्भर रहते है इसलिए उन्हे स्पेश्यल नीड्स कहा गया है, हम लोगो को भी किसी भी उम्र में कोई गंभीर बिमारी हो जाती है जिसकी वजह से कोई ना कोई हमारी देखभाल करता है... तो भी हम नोर्मल । सिर्फ ढुक्त से नोर्मल या स्पेश्यल की पहेचान होती है ? पढाई मे अच्छा होने से हम नोर्मल...! हम गुस्सा करे, गाली बोले, किसीको मारे, बडो के सामने बोले, जिद करे, इर्षा करे, नींदा करे,

जूठ बोले, चोरी करे, लडाई करे, सही-गलत न समझे, बडो का कहना न माने... इत्यादि.. तो भी हम नोर्मल...

इन बच्चे में कोई बोल नहीं सकता, या जो बोल सकता है वो अपनी बात ठीक से समजा नहीं सकता... या उनकी बात को हररोज साथ में रहकर भी हम समझ नहीं पाते इसलिए वो गुस्सा करते है या कुछ गलत कर देते है तो हम उसे हाइपर या बिहेव्यर का नाम दे देते है ।

अगर हम ६ तक या १० तक या कोलेज तक अच्छे से पढे फिर अकस्मात या कोमा या पेरालिसीस... या किसी भी वजह से दूसरे पर निर्भर हो गए तो हम क्या... नोर्मल या स्पेश्यल । सिर्फ किसी पर निर्भर होने की वजह से हमे नोर्मल या स्पेश्यल कहा जाता है ? आखिर हम है तो इन्सान ही ना ! दिल तो सब में धडकता है । दर्द, खुशी, उदासी, गुस्सा ये सब भावनाए सबको होती है । अब इन्सान ने इन्सान को समझना बंद कर दीया है । जिसे हम नोर्मल कहते है वो नोर्मल को ही नहीं समझता फिर आगे क्या... ! इन्सानने अपनी सोच सिर्फ अपने तक ही सीमित कर दी है ।

हमको माँ की उदर में इश्वर भेजते है । इश्वर ने भी इन बच्चो को इस पैगाम के साथ भेजा है कि धरती पर समाज के किसी भी वर्ग का व्यक्ति हो सब की आँखो पर पडदा पड गया है । जिंदगी के पाठ सब भूलने लगे है । तुमको देखके या तुम्हारे साथ होने से शायद सबको इन्सानियत याद

रहे ।

हम मंदिर के भगवान को कैसे नहलाते है, कपडे पहनाते है, उनको सजाते है, उनके लिए प्रसाद बनाते है... इत्यादि ये सब कितने प्यार से करते है और प्यारभरी नयनों से इश्वर को देखते है । ये बच्चे भी वैसे ही है । फिर उनकी ओर प्यारभरी नजर सब की क्यूँ नहीं होती ? बच्चा सिर्फ मा या पिता का फर्ज नहीं पूरे घर और कुटुम्ब की जिम्मेदारी होती है । इन बच्चो के लिए जो भी करो वो उतने ही प्यार से करो जितने प्यार से दूसरो के लिए करते हो ।

बच्चे को पूरे दिल से माँ या पिता अपनाएगा तो घर अपनाएगा, घर अपनाएगा तो कुटुम्ब अपनाएगा, कुटुम्ब अपनाएगा तो सोसायटी अपनाएगी, सोसायटी अपनाएगी तो गाँव, शहर, नगर, देश, दुनिया.....

सब लोग जानेंगें, समझेगें और अपनाएगे ।

- जयश्री पटेल

ये बच्चे कहते है कि.....

सब हमें क्या समझते है ? हमारे मनमें भी बहोत सारे तरंग उठ रहे है । बहोत सारी भावनाए मनमें है जो हम चाहते है कि कोई समझे । हम बोल नहीं सकते इसलिए जो आप बोलो वही हमे करते रहने का । मेरी इच्छा कुछ और करने की भी हो सकती है और आप कुछ अलग कराओ फिर में अपना स्वभाव बदलु तो आप सबको बोलते हो कि में गुस्सा बहोत करता/करती हूँ । शांति से, प्रेम से मेरे पास बैठ के मेरी आँखो की भाषा को समझने की कोशिश करो । में क्या सोचता हूँ वो जानने कि कोशिश तो कर सकते हो, फिर भले न जान पाओ । मुझे उसमें भी खुशी मिलेगी, शायद मेरी हँसी देखके आपको कोई रास्ता मिल जाए । मुझे प्यार, हूँफ, सजा, शिक्षा सब दो । मुझे दिल का हिस्सा बना लो । जो हमको सिर्फ दिखावे के लिए कार्य करवाते है वो हमें पता चल जाता है । वहाँ हमें करना अच्छा ही नहीं लगता । जो भी कराओ वो दिल से कराओ वर्ना ना कराओ । हम लोग बोल नहीं सकते ओर बोल सकते है तो समझा नहीं सकते । सुबह से शाम में कभी हम जकड जाते है । कभी हमको भी फ्री रहेना होता है । कभी-कभी हमारा मूड भी नहीं होता है ।

- मुझे घर पे छोडके फिल्म देखने चले गये ।
- सबके सामने मुझे बहोत प्यार करते है पर अकेले में मेरे साथ कुछ अलग बर्ताव करते है ।
- मुझे रुम मे बंद कर देते है ।
- मुझे होटल का खाना अच्छा लगता है पर कोई बार ही साथ लेकर जाते है ।
- में सिर्फ मेरी माँ या पापा की जिम्मेदारी हूँ ? मेरे भाई/बहन को तो घर के दूसरे लोग अच्छे से बुलाते है, प्यार करते है... मुझे क्युँ नही ?
- मैं बोल सकता हूँ, घर पे ऊँची आवाज में बात करते है, लडाई करते है । फिर में वो कहीं भी बोल दूँ तो कहते है पता नहीं कहाँ से सीख के आया है ।
- मुझे नास्ता या पेकेट माँगने पर दे देते है, फिर कहेंगे रोटी-सब्जी खाता ही नहीं ।
- मुझे शाला में दूसरे बच्चे पागल कहते है ।
- मुझे बचपन से दूसरे भाई/बहन से कमजोर समझके डाँटा ही नहीं फिर कहते है मैं जिद्दी हूँ ।
- मुझे मम्मी के जितना कोई नहीं प्यार करता और समझता ।
- मैं अपने आप को अकेला महेसुस करता/करती हूँ ।
- घर पे उनका वक्त बचे इसलिए रोजिंदी क्रिया मुझे करवाते रहे, हमें उन पर निर्भर कर दिया फिर मेरे बडे होने के

बाद चिंता कर रहे है, अगर बचपन से ही हमे स्वनिर्भर करने की कोशिश की होती तो...

- मुझ पे पैसे खर्च करके मुझे उनसे हमेशा दूर ही रखते है ।
- मेरी वजह से मेरी मम्मी या पापा डिप्रेशन में रहे वो मुझे अच्छा नहीं लगता ।
- मैं बोल नहीं सकता इसलिए कहाँ क्या होता है किसीको बता नहीं सकता ।
- मुझे पापा ही अच्छे से समझ सकते है, प्यार भी उन्ही का मिला है ।
- सबके साथ रहकर भी मैं अपने आप को असलामत मानता हूँ, क्युँ ?
- मेरे दूसरे भाई/बहन का घर बसे इसलिए मुझे होस्टेल में छोड दिया ।
- मैं खुद से बहार निकलने की कोशिश करु तो हाथ पकडके बिठा देते है, खुद भी डरेंगे मुझे भी डराएँगे ।
- मुझे सबके साथ खेलना अच्छा लगता है पर मुझे उनसे अलग समझके कोई मेरे साथ नहीं खेलता ।
- मैं बोल सकता हूँ फिर भी मेरी बात को सब के सामने नकार दिया जाता है ।
- मैनें गुस्सा क्युँ किया ये जाने बिना मुझपे चिल्लाते है ओर चूप करा देते है ।

- सबका गुस्सा मुझपे ही निकालते है ।
- मुझे सब बहोत प्यार करते है, थोडी डाँट भी होनी चाहिएना जिससे में अपने काम खुद सीख सकु ओर जिद्दी न बनु ।
- मेरे दूसरे भाई/बहन आने के बाद मैं बोज बन गया तो मुझे घर पे बिठा दिया ।
- मुझे मेरे मम्मी/पापा होस्टेल में छोडने की बात कर रहे थे, तब में बहोत रोया ।
- खाने में, कपडे में मेरी खुद की पसंद-नापसंद कोई समझता नहीं ।
- मुझे सिखाने के लिए घर के सभी लोग बहोत सपोर्ट करते है ।
- मेरी हमेशा मेरे दोस्तो के साथ तुलना करते रहते है ।
- शाला का अभ्यासक्रम सिखाने में मुझे समझना भूल जाते है ।
- कई बार लगता है बहोत समझ होती तो अच्छा होता या तो इतनी भी समझ ना होती तो अच्छा होता ।
- सब खर्च हमारे दूसरे भाई/बहन के पीछे ही करते है, हमारी चीजे तो बहोत ही पुरानी हो जाए तब हमको नई मिलती है ।
- मेरी वजह से मेरे मम्मी/पापा को बहोत सहेन करना पडता है, उनका आभार व्यक्त करना चाहता/चाहती हूँ पर करना नहीं आता ।

- हमारे लिए वक्त क्यूँ नहीं होता ?
- मेरी मम्मी को सब सलाह देते रहते हो उनको में ये कहता हूँ मुजे सपोर्ट या मदद कितनी करोगे ?
- आप हर जगह हमें लेकर नहीं जा सकते ये हम समझते है ।
- घर पे पूरे दिन मुझे टी.वी. का रिमोर्ट, मोबाइल, या आइपेड दे देगें, फिर वो मुझे ना मिलने पर क्या होगा... । वो चीज हमेशा लेने की मुझे आदत हो ही जाती है ।

हम घर के बहार कही भी निकले, गली, गार्डन, होटल, थियेटर, मोल, स्कूल या कोई भी जगह पे... तो सब लोग हमको अजीब नजर से देखते है । जैसे पहले कभी इन्सान को देखा ही ना हो । हमारे बारे में गलत सोच भी बना लेते है । हमको जानने या समझने के बजाय हमको या हमारे माता या पिता को खरी-खोटी सुनायेंगे । उनके बच्चो को हमारे साथ खेलने नहीं देंगे । शाला में भी साथ मे बिठने से मना कर देंगे । हमारे माता या पिता ही हमारे जैसे दूसरे बच्चो को और उनके माता या पिता को कई बार नहीं समझते ।

बुध्धिक्षमता किसकी कम है ? इन बच्चों की या सोसायटी में रहनेवाले हम जैसे लोगों की... जो एसा सोचते है ।

विस्मृति के विचार विमर्श...

ये बच्चों को भी बचपन से अच्छी ट्रेनिंग दी जाए तो वो स्वनिर्भर बन सकते है । उनको स्वनिर्भर बनाने के लिए प्यार, हूँफ के साथ साथ सपोर्ट ओर प्रेरणा की आवश्यकता होती है । लेकिन प्यार भी ज्यादा हो जाए तो सीखाने में बाधा बन सकता है । कई बार सीखाने के लिए ऊँची आवाज में बोलना पडता है, डाँटना पडता है । बच्चा दूसरो पर निर्भर रहे उसकी जगह स्वनिर्भर बने वो हमारे लिए ज्यादा महत्त्व रखता है । बच्चा भी यही चाहता है कि सिखाने के लिए डाँटो, आगे बढाने के लिए उनके प्रेरणास्त्रोत बनो, सपोर्ट करो... वो हमे कहने में असर्मथ है । हमें हकारात्मक सोच, गुस्से पर काबू ओर संयम रखना बहोत जरुरी है । हमें बच्चें की दूसरे बच्चे के साथ तुलना नहीं करनी चाहिए ।

सिर्फ बाते बनाना, सलाह देना आसान है ओर उन बातों पर अमल करना उतना ही मुश्किल । जिसपे बितती है उनको ही पता चलता है । हर घर की अलग कहानी होती है । गलतियाँ हम इन्सान से ही होती है लेकिन जो गलती को मान ले ओर सुधार करने की कोशिश करे वो बडा न होकर भी बडा इन्सान बन जाता है, और इश्वर नें हमें वो ताकत दी है कि हम अपनी की हुई गलती सुधार सके । इसलिए हम सबको ये बात याद रखनी है कि कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती..। इन बच्चों को दिल से समझने में आज भी हम गलतियाँ कर रहे है । लेकिन क्या कभी हम उनको सोरी बोलते है ?

विस्मृति के बच्चों के दो बोल...

विस्मृति में जो ट्रेनिंग लेके गए है वो और जो अभी ट्रेनिंग ले रहे है वो सारे बच्चे अपने माता-पिता से कहना चाहते है कि....

हम बहोत ही नसीबवाले है की इश्वर ने हमें आप जैसे माता-पिता दिए । हम आपका ऋण कैसे चुका पाएगे ? हमारे लिए सारे दिन मधर्स डे और फाधर्स डे ही है । हमारे लिए आपने अपनी पूरी जिंदगी देदी । अपने शौख तक अधूरे छोड दिए । यहाँ तक की नौकरी भी छोड दी । जब आप दूसरे बच्चो को देखके रोते हो तब हमें भी दुःख होता है और अपने आप पर गुस्सा भी आता है कि हम आपकी ख्वाइशो को पूरा नहीं कर सकते । आप हमारे गुस्से को झेलते हो, साथ में लोग जो बोले वो भी सेहते हो । मम्मी-पापा होने के सारे फर्ज आपने निभाए पर बेटा/बेटी होने का फर्ज निभाने में हम असमर्थ है, फिर भी सदैव आप लोग मुस्कुराते है । सच है कि मम्मी-पापा इश्वर का रुप होते है । आप लोग वो निस्वार्थ प्यार की धारा हो जो कभी रुकती नहीं, बहती ही रहती है । मम्मी-पापा आप लोग अनमोल हो । आप लोग जो कर रहे हो वो शायद... आगे क्या बोले शब्द ही नहीं मिल रहे है । आप लोगोंने अपना फर्ज निभाया हम भी अपना फर्ज जरुर निभाएगे । किसीना किसी रुप में कभी भी हम अपना फर्ज पूरा करेंगें । आप लोग हमारे जैसे बच्चे चाहो या न चाहो पर हम हमेशा इश्वर से आप जैसे मम्मी-पापा ही चाहते है । मम्मी-पापा आपको बार बार कोटि-कोटि वंदन । **LOVE U MUMMY, LOVE U PAPA.**

विस्मृति चाहता है...

विस्मृति सिर्फ टीचर्स या कोई खास व्यक्ति से नहीं है, विस्मृति उनके बच्चो से है और उनसे ही रहेगा । माता-पिता के साथ बच्चे भी उतना ही सफर करते है । इन बच्चों के दिल में भी बहोत कुछ है जो वो हमको कहना चाहते है... तो आज से हम सब ये कोशिश करें कि हम उनके खुशी, दर्द को महेसुस कर सके और उनके दिल को पढ सके । बच्चों को आगे बढाने के लिए या उनकी काबिलियत को पहचानने के लिए हम सब मिलके मन से ये निर्धार करे कि हम इन बच्चों को दिल से जानने की और समझने की कोशिश करेगें । दूसरे बच्चों के प्रति भी उतना ही निस्वार्थभाव रखेंगे । बच्चों को स्वनिर्भर बनाने की कोशिश सब साथ मिलके करे जिसमें विस्मृति हमेशा आप लोगों के साथ है । विस्मृति हमेशा रिश्तो को महत्त्व देता है । रिश्ता आप का किसी से कोई भी हो पर उन रिश्ते में विश्वास हो तो आप कुछ भी हांसिल कर सकते हो । हर दिन सबके लिए चुनौती से कम नहीं होता, पर इनका सामना करना ही जिंदगी है । हम अपनी किसी भी कमजोरी पर जीत हांसिल कर सकते है, बस जरुरत है कठिन परिश्रम और धैर्य के साथ अपने लक्ष्य के प्रति स्वयं को समर्पित करने की ।

VISMRUTI - Climbing the Ladder of Development.

Facilities

- The centre is well-lit and ventilated.
- The Therapy room has books, picture cards, daily life objects.
- The room for Special Education has a lot of toys and games.
- There is a separate room for parent counseling.
- There is a separate room for teacher training.
- We have cameras in each room for safety monitoring of children
- Special care is taken to ensure cleanliness and hygienic conditions
- Basic kitchen facility

We care for individuals with following conditions:

- Cerebral Palsy
- Hearing Impairment
- Visual Impairment
- Down syndrome
- Autism
- Slow learner

- Speech Problem
- ADHD (Attention Deficit Hyperactivity Disorder)
- Special Needs

Services & Therapies

We cater to multiple special needs, but its always done with a heartfelt approach. We believe that every child is a child first and then a child with special needs.

- Customised Personal Training
- Group Batch Therapy Sessions
- One to one therapy sessions
- Practical Training
- Home Visits
- Day Care
- Special Education
- Early intervention
- Behaviour Therapy

Please give your opinion on
Email : vismrutisct@gmail.com
Whatsapp : 9825059897

PLEASE NOTE THE POINTS,
WHICH CAN CHEER UP YOUR CHILD

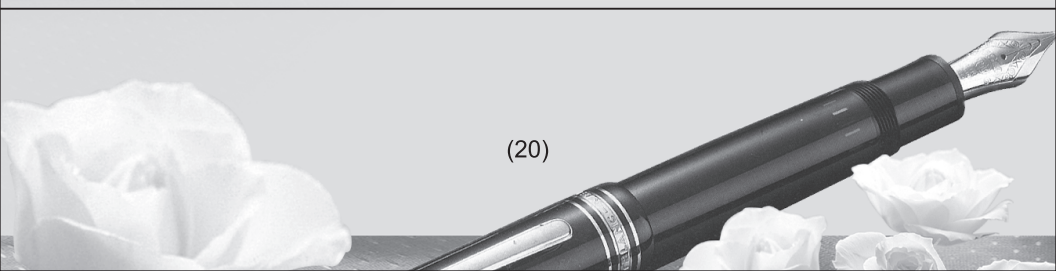

PLEASE NOTE THE POINTS,
WHICH CAN CHEER UP YOUR CHILD

PLEASE NOTE THE POINTS, WHICH CAN CHEER UP YOUR CHILD